Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2022 International Council for Education Research and Training
2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376
https://doi.org/10.5281/zenodo.7747810

# वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी की महत्ता व संभावना

राजपाल[1], कुमार संदीप[2]

[1]सहायक प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, हिसार, हरियाणा

[2]सहायक प्रोफेसर, दर्श मॉडल, डिग्री कॉलेज सोनीपत हरियाणा

**सारांश**

भाषा भावाभिव्यक्ति तथा सम्प्रेषण का एक सशक्त तथा महत्वपूर्ण माध्यम है। भाषा के अभाव में भाव उसी प्रकार लगते है जैसे आत्मा के बिना शरीर। विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो कभी धीमी गति से तो कभी तीव्र गति से सामने आती है। जिस प्रकार मनुष्य की विकासावस्था विविध उतार-चढ़ावों का परिणाम है उसी प्रकार भाषा भी विभिन्न रूपों में प्रवाहित होती रही है। आरम्भ में जहाँ वह संकेतों के द्वारा अभिव्यक्ति का माध्यम बनी वहीँ आगे चलकर मौखिक और फिर लिखित शब्दों के रूप में सामने आयी। उसी प्रकार अपने साथ घटित किसी घटना को बताने के लिए उसने जिस माध्यम का सहारा लिया होगा वह कहानी के रूप में सामने आया होगा। अभिप्राय यह है कि आरम्भ में विभिन्न स्थितियों के गीत, कहानी, नीति-वाक्य, पहेलियाँ, भजन, स्वांग तथा नाटक आदि मौखिक साहित्य के रूप में सामने आया, तदुपरांत विभिन्न विकसावस्थाओं को पार करते हुए वह लिखित साहित्य के रूप में आया।

हिंदी की वर्तमान स्थिति में कहीं न कहीं वैश्वीकरण का योगदान है। हालांकि विश्लेषक वैश्वीकरण को मूल रूप से एक आर्थिक संकल्पना मानते हैं। जो भारतीय समाज और संस्कृति अपनी पांच हजार साल से ज्यादा पुरानी होने पर गर्व करती थी उसे वैश्वीकरण ने एक झटके में बदल दिया है। इसका असर हिंदी पर भी पड़ा है। वैश्वीकरण की मूल संकल्पना व्यापार, विदेशी निवेश द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था पर अधिग्रहण तथा आपसी समन्वय, आदान-प्रदान के माध्यम से एक मंच का निर्माण करने की प्रक्रिया के रूप में उभरती है। इन सब में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वैश्वीकरण के बाद हिंदी भी एक नई भूमिका में हमारे सामने आई है। पर भारत में आज भी हिंदी की भूमिका आम आदमी के सपने और हकीकत के बीच संतुलन बनाती और हिचकोले खाती हुई भाषा

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

की है। हिंदी की यह स्थिति दरअसल राजशक्ति और लोकशक्ति के बीच आपसी समन्वय की कमी की वजह से है। राजशक्ति इसलिए कि गणतांत्रिक भारत का संविधान उसे संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अधिकार प्रदान करता है। मगर अंग्रेजी मानसिकता उसे यह अवसर ही नहीं देती कि वह फल-फूल सके। फिर भी, लोकशक्ति हिंदी का स्वभाव है, उसकी बुनियाद है, जिसे वह छोड़ नहीं सकती। और इसी का नतीजा है हिंदी का विकास। हिंदी वहीं ज्यादा फली-फूली है जहां लोकशक्ति का असर है।

हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है, जितना अधिक प्रयोग हम हिंदी और प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग शिक्षा, ज्ञान विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि में करेंगे उतनी ही तेज गति से हम भारत का विकास करेंगे। हिंदी पुरातन भी है और आधुनिक भी। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा का आधिकारिक रूप में दर्जा मिले। यह तभी होगा जब हमारी मानसिकता बदलेगी।

## वैश्वीकरण के दौर में हिंदी

हिंदी ही राजभाषा क्यों? हिंदी का प्रयोग बढ़ाने पर इतना जोर क्यों? ऐसे प्रश्न अनेक बार उपस्थित होते हैं। हॉलीवुड की फिल्मों में भी हिंदी शब्दों का प्रयोग हो रहा है। ऑस्कर से सम्मानित फिल्म 'अवतार' हिंदी का ही शब्द है। कुछ वर्ष पहले अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूम मचाने वाली फिल्म 'स्लमडॉग मिलिनेयर' का 'जय हो' गाना इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। मीडिया की खबरों के मुताबिक, इस गाने का प्रयोग फिलीपींस, स्पेन आदि देशों में जेल कैदियों की दशा सुधारने में किया जा रहा है।

हिंदी ही राजभाषा क्यों? हिंदी का प्रयोग बढ़ाने पर इतना जोर क्यों? ऐसे प्रश्न अनेक बार उपस्थित होते हैं। खासकर, सरकारी कार्यालयों, कॉरपोरेट कार्यालयों में कार्यरत ऐसे युवाओं के बीच, जिन्हें राष्ट्र निर्माण और स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी की ऐतिहासिक भूमिका के बारे में ज्यादा पता नहीं। पर, इन्हीं सबके बीच हिंदी भारत की राजभाषा, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा से आगे बढ़ते हुए विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है।

हिंदी की वर्तमान स्थिति में कहीं न कहीं वैश्वीकरण का योगदान है। हालांकि विश्लेषक वैश्वीकरण को मूल रूप से एक आर्थिक संकल्पना मानते हैं। जो भारतीय समाज और संस्कृति अपनी पांच हजार साल से ज्यादा पुरानी होने पर गर्व करती थी उसे वैश्वीकरण ने एक झटके में बदल दिया है। इसका असर हिंदी पर भी पड़ा है। वैश्वीकरण की मूल संकल्पना व्यापार, विदेशी निवेश द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था पर अधिग्रहण तथा आपसी समन्वय, आदान-प्रदान के माध्यम से एक मंच का निर्माण करने की प्रक्रिया के रूप में उभरती है। इन सब में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वैश्वीकरण के बाद हिंदी भी एक नई भूमिका में हमारे सामने आई है। पर भारत में आज भी हिंदी की भूमिका आम आदमी के सपने और हकीकत के बीच संतुलन बनाती और हिचकोले खाती

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

हुई भाषा की है। हिंदी की यह स्थिति दरअसल राजशक्ति और लोकशक्ति के बीच आपसी समन्वय की कमी की वजह से है। राजशक्ति इसलिए कि गणतांत्रिक भारत का संविधान उसे संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अधिकार प्रदान करता है। मगर अंग्रेजी मानसिकता उसे यह अवसर ही नहीं देती कि वह फल-फूल सके। फिर भी, लोकशक्ति हिंदी का स्वभाव है, उसकी बुनियाद है, जिसे वह छोड़ नहीं सकती। और इसी का नतीजा है हिंदी का विकास। हिंदी वहीं ज्यादा फली-फूली है जहां लोकशक्ति का असर है।

**वैश्वीकरण के दौर में हिंदीः संभावना का समकाल**

दरअसल, हिंदी के प्रसार और विकास की ताकत उसके मिश्र स्वभाव में छिपी हुई है। जब हिंदी संस्कृत की तत्सम शब्दावली से सजती-संवरती है तो वह प्रबुद्ध समाज की जुबान बनती है, उर्दू के साथ रच-बस कर संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में बोली-समझी और देसी भाषाओं तथा बोलियों के शब्दों को अपना कर देश-दुनिया के सुदूर क्षेत्रों में जानी-पहचानी जाती है। हिंदी का यह स्वभाव ही उसे एक व्यापक और वैश्विक भूमिका में ला खड़ा करता है।

स्वाभाविक ही भारतीय बाजार की भूमिका बड़ी हो गई है। वैश्वीकरण के दौर में भारतीय बाजार की ताकत जैसे-जैसे बढ़ेगी, भारतीय भाषाओं और हिंदी की भूमिका व्यापक होगी। वर्तमान कॉरपोरेट युग में औद्योगिक उत्पाद, उपभोक्ता, बाजार और टेक्नोलॉजी का सर्वथा नया संबंध बन रहा है। इसमें सब कुछ बहुराष्ट्रीय है। पर इसकी जुबान वही है, जो हमारी-आपकी जुबान है। यानी वैश्वीकरण के दौर में हमारे बीच जो चीजें बिक रही हैं वे भले दुनिया के किसी भी हिस्से का उत्पाद हों, पर बिक रही हैं हमारी भाषा में।

आज अंग्रेजी का जो वर्चस्व अचानक बढ़ा हुआ प्रतीत होता है, उससे डरने की बात नहीं। भाषा की संवेदनात्मक शक्ति और बाजार का रहस्य जानने वाले लोग बखूबी समझते हैं कि यह समय हिंदी जैसी जनभाषा को सीमित और संकुचित करने का नहीं, बल्कि उसकी शक्ति और सामर्थ्य में बढ़ोतरी लाने वाला है। क्योंकि हिंदी भारत जैसे विशाल देश की प्रमुख संपर्क भाषा है। इसे दुनिया की लगभग एक अरब तीस करोड़ आबादी समझती है।

आज भी अंग्रेजी कि पहचान तकनीकी श्रेष्ठता और आधुनिक सभ्यता के स्रोत के रूप में अपरिहार्य है। सूचनाओं के आदान प्रदान की सुविधा और बहुराष्ट्रीय निगमों में रोजगार की कुंजी के रूप में उसकी सबलता विश्वव्यापी है। फिर भी क्या कारण है कि चाहे अमेरिकी चुनाव हो या लंदन के मेयर का चुनाव या वर्ष 2014 का भारतीय आम चुनाव, सभी में विजयी पक्ष की जीत में हिंदी का भी योगदान रहा। यह सब बाजार की के कारण नहीं, बल्कि हिंदी की अपनी ताकत का कमाल है। क्योंकि यह अपने स्वभाव से जनभाषा और स्वरूप में सर्वग्राही भाषा है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का फैलाव लिपि के स्तर पर भी दिख रहा है। देश में विज्ञापनी भाषा में हिंदी का

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

बढ़ता प्रयोग इसका उदाहरण है। वैश्वीकरण के बाद हुए भाषायी विस्तार से हिंदी में भारतीय भाषाओं के शब्द ही नहीं आए, बल्कि इसका फैलाव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी आप्रवासियों और विदेशियों की बोली में देखा जा सकता है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, जमैका, टोबैगो और गुयाना आदि देशों में करीब पचास फीसद लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। हिंदी के सैकड़ों शब्द मॉरीशस की क्रियोल में हैं। अमेरिका, कनाडा जैसे देशों में आप्रवासियों की बड़ी आबादी कुछ अलग प्रकार की हिंदी बोलती है। वहां के हिंदी रेडियो कार्यक्रमों में भारतीय रेडियो कार्यक्रमों से ज्यादा गुणवत्ता नजर आती है। हॉलीवुड की फिल्मों में भी हिंदी शब्दों का प्रयोग हो रहा है। आस्कर से सम्मानित फिल्म 'अवतार' हिंदी का ही शब्द है। कुछ वर्ष पहले अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूम मचाने वाली फिल्म 'स्लमडॉग मिलिनेयर' का 'जय हो' गाना इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। मीडिया की खबरों के मुताबिक, इस गाने का प्रयोग फिलीपींस, स्पेन आदि देशों में जेल कैदियों की दशा सुधारने में किया जा रहा है।

हिंदी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है। संचार माध्यमों ने हिंदी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है। भाषाएं संस्कृति की वाहक होती हैं और संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों से समाज के बदलते सच को हिंदी के बहाने ही उजागर किया गया। आज स्मार्टफोन के रूप में हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद है और उसमें हमारी भाषा। सभी ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिंदी में संदेश भेजना, हिंदी की सामग्री को पढ़ना, सुनना या देखना लगभग उतना ही आसान है जितना अंग्रेजी की सामग्री को। हालांकि कंप्यूटरों पर भी हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है और इंटरनेट पर भी, लेकिन मोबाइल ने हिंदी के प्रयोग को अचानक जो गति दे दी है, उसकी कल्पना अभी पांच साल पहले तक किसी ने नहीं की थी। इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की सामग्री की वृद्धि दर प्रभावशाली है। अंग्रेजी के उन्नीस फीसद सालाना के मुकाबले भारतीय भाषाओं की सामग्री नब्बे फीसद की रफ्तार से बढ़ रही है।

जिस तरह हिंदी से अंग्रेजी की तरफ संक्रमण की एक धारा बह रही है, उसी तरह भारतीय भाषाओं और बोलियों से एक धारा हिंदी की तरफ भी आ रही है, जिसका नतीजा है हिंदी का सर्वमान्य रूप से देश की प्रमुख संपर्क भाषा बन जाना। पब्लिक लैंग्वेज सर्वे ऑफ़ इंडिया के ताजा सर्वेक्षण के आंकड़े बताते हैं कि वृद्धि की मौजूदा रफ्तार से हिंदी पचास साल में अंग्रेजी को पीछे छोड़ देगी। यह सब हिंदी की भाषायी सामर्थ्य, समृद्धि, विविधता, विस्तार, जीवंतता, वैज्ञानिकता आदि के कारण है और इसमें वैश्वीकरण का जबर्दस्त योगदान है।

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी को और सशक्त बनाने के लिए दूसरी भाषाओं के साथ इसके संबंधों को अनुवाद के माध्यम से मजबूत करना होगा। अनुवाद की भूमिका भाषा की संपन्नता और समृद्धि में सहायक होती है। इसके लिए हिंदी को जनभाषा के स्वरूप के निकट

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

जाना होगा, क्योंकि लोकतंत्र की सफलता लोक को तंत्र के निकट लाने में निहित है।

ऐसे में, हमें हिंदी के विकास की चुनौतियों के समाधान खोजने की आवश्यकता है। इसमें पहली आवश्यकता है हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं के संबंधों को मजबूत कर, एकीकृत शब्दावली बनाने और मानकीकरण करने की।

## वैश्वीकरण के दौर में हिंदी की महत्ता

वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, निजीकरण, उदारीकरण व बाजारवाद में से किसी भी नाम से पुकारिए, भारत में यह प्रक्रिया उन्नीस सौ नब्बे के दशक में आरंभ हुई थी। इस युग में कोई सीमा, कोई सरहद या कोई दीवार नहीं हैं अपितु यह तो पूरे विश्व को एक ग्राम में तब्दील करने की ऐसी अवधारणा है जिसने पूरी दुनिया की तस्वीर ही बदल कर रख दी है वैश्वीकरण की प्रक्रिया आरंभिक दौर में भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हिंदी की तुलना में अंग्रेजी भाषा का महत्व बढ़ा अवश्य था परंतु धीरे-धीरे उसकी गति धीमी होती चली गई। विश्व बाजार व्यवस्था की इस प्रकृति से भारत अछूता नहीं रह सकता था उसे भी वैश्विक मंडी में देर सबेर खड़ा होना ही था। यह भी जग जाहिर है कि वैश्वीकरण ने जहां एक तरफ मुक्त बाजार की दलीलें पेश की वहीं दूसरी तरफ दुनिया में एकक नई उपभोक्ता संस्कृति को भी जन्म दिया आजकल संयुक्त राष्ट्र और विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदी को शुमार करने की ठोस दलीलें दी जा रही हैं। विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी एक ऐतिहासिक परिवर्तन की आहट है परिभाषा प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक नोम चॉमस्की ने वैश्वीकरण का अर्थ अंतराष्ट्रीय एकीकरण माना है इस एकीकरण में भाषा की अहम् भूमिका होगी और जो भाषा व्यापक रूप से प्रयोग में रहेगी, उसी का स्थान विश्व में सुनिश्चित होगा नोम चॉमस्की के अनुसार जब विश्व एक बड़ा बाजार हो जाएगा तो बाजार में व्यापार करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग होगा उसे ही प्राथमिकता दी जाएगी और वही भाषा जीवित रहेगी। वेट्टे क्लेर रोस्सर ने कहा था कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया अचानक ही बीसवीं सदी में नहीं उत्पन्न हुई अपितु दो हजार वर्ष पूर्व भी भारत ने उस समय विश्व के व्यापार क्षेत्र में अपना सिक्का जमाया था जब वह अपने जायकेदार मसालों, खुशबूदार इत्रों एवं रंग बिरंगे कपड़ों के लिए जाना जाता था। ऐसे समय भारत का व्यापार इतना व्यापक था कि रोम की संसद ने एक विधेयक के माध्यम से अपने लोगों के लिए भारतीय कपड़े का प्रयोग निषिद्ध करार दिया ताकि वहां के सोने के सिक्कों को भारत ले जाने से रोका जा सके तभी से भारत की उक्ति वसुधैव कुटुंबकम प्रचलित हुई हमारे लिए वैश्वीकरण का मुद्दा कोई नया नहीं है विश्वस्तर पर सरकारी कामकाज हेतु अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी, रूसी और अरबी भाषाओं को अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का स्थान प्राप्त है। हिंदी भी संयुक्त राष्ट्र संघ में अंतर्राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्राप्त करने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक भाषा (ग्लोबल लेंग्वेज) के रूप में हिंदी की उपयोगिता को विश्व का व्यापारिक समुदाय अब भली-भांति समझ भी चुका है। आंकड़े

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

दर्शाते हैं कि सवा सौ करोड़ की आबादी वाले इस राष्ट्र में चालीस करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिंदी है। पैंतीस करोड़ से अधिक लोग इस भाषा का प्रयोग दूसरी भाषा के रूप में करते हैं। लगभग तीस करोड़ लोग ऐसे हैं जिनका किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा के साथ सरोकार जुड़ा हुआ है। कहने का आशय यह है कि देश की आबादी के लगभग तीन चैथाई से अधिक लोगों में हिंदी संपर्क का माध्यम है। बाजारवाद और हिंदी वैश्वीकरण का अर्थ व्यापक तौर पर बाजारीकरण है आज मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र बाजारवाद से प्रभावित है। मुक्त व्यापार और वैश्वीकरण के युग में भारत में हिंदी भाषा संप्रेषण का एक बड़ा बाजार है। प्रसिद्ध समाज विज्ञानी प्रोफेसर आनंद कुमार से वैश्वीकरण के आधार तत्वों के रूप में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया, मध्यम वर्ग, बाजार, संचार माध्यम, बहुउद्देशीय कंपनियां, आप्रवासन और संपन्नता नामक सात तत्वों को प्राथमिकता प्रदान की है। इनमें से एक देशी भाषाओं के अनुकूल बाजार और दूसरा संचार माध्यम प्रमुख हैं। बहुभाषिक समाज व्यवस्था वाले भारत में हिंदी को वैश्विक बाजार ने संपर्क व व्यवहार की भाषा के रूप में अपनाया भारत दुनियाभर के उत्पाद निर्माताओं के लिए एक बड़ा खरीदार और उपभोक्ता बाजार है। दुनिया अब भली भांति इस बात को पहचान चुकी है कि यदि विशाल आबादी वाले भारतीय मध्यमवर्गीय बाजार तक उसे अपनी पहुंच बनानी है तो हिंदी को अपनाना ही होगा। आज बहुराट्रीय और देशी कंपनियों की लगभग सत्तर प्रतिशत से अधिक वस्तुएं हिंदी के माध्यम से जनमानस तक हंच रही हैं। वैश्वीकरण में आर्थिक और सास्कृतिक दोनों दृष्टि से हिंदी की भूमिका बढ़ी है नई बाजार संस्कृति अब तक स्वायत्त रहे समाजों और संस्कृतियों के रहन-सहन, आचार-विचार, भाषा-भूषा और मूल्यबोध सभी का अपने तरीके से अनुकूलन कर रही है। बाजारीकरण की व्यवस्था में हिंदी भाषा इसका माध्यम बनकर उभरी है। प्रिंट एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया और हिंदी टेलिविजन पर प्रसारित कार्यक्रम चाहे किसी भी विषय से संबंधित हों उन्हें व्यावसायिकता की दृष्टि से हिंदी एक बहुत बड़ा क्षेत्र उपलब्ध कराती है। टेलीविजन ने इस तरह हिंदी के भाषा वैविध्य और संप्रेषण क्षमता को सर्वथा नई दिशाएं प्रदान की हैं। वैश्वीकरण के इस सघन और उत्कट समय में मीडिया को वर्चस्वशाली भाषा और उच्च तकनीकी विकास का स्त्रोत तथा आधुनिकता के मूल्यों का वाहक माना जा रहा है। विज्ञापनों की भाषा और प्रमोशन वीडियो की भाषा के रूप में सामने आने वाली हिंदी शुद्धतावादियों को भले ही न पच रही हो, युवा वर्ग ने उसे देश भर में अपने सक्रिय भाषा कोष में शामिल कर लिया है। यह हिंदी का ही कमाल है कि आज राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों को हम गांवों में प्राप्त कर सकते हैं समाचार पत्रों टी वी की विज्ञापन संस्कृति का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। आजकल साबुन और टूथपेस्ट जैसी दैनंदिन उपयोग की वस्तुओं से आगे चलकर अब मोटर साईकिल, कार, फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन, ब्रांडेड कंपनियों के कपड़े आदि के विज्ञापन हिंदी में प्रसारित किए जा रहे हैं। छोटे-छोटे कस्बों तक

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

सौंदर्य प्रसाधन के ब्यूटी पार्लर खुल चुके हैं। सैलून जैसे अब गजरे जमाने का शब्द लगने लगा है बड़े-बड़े होर्डिंग्स पर हिंदी में लिखे लोक लुभावन विज्ञापनों और नारों ने शहरी सीमा को लांघकर कस्बों और गांवों में जगह बना ली है टी वी और मोबाइल से शायद ही अब देश का कोई कोना अछूता बचा होगा। वैश्वीकरण बाजार के विकास और विस्तार में प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक माडिया पर प्रसारित विज्ञापनों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। अभिव्यक्ति कौशल के विकास का अर्थ भाषा का विकास ही है बाजारीकरण ने आर्थिक उदारीकरण, सूचनाक्रांति तथा जीवन शैली के वैश्वीकरण की जो स्थितियां भारत की जनता के सामने रखी, इसमें संदेह नहीं कि उनमें पड़कर हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति कौशल का विकास ही हुआ। आज प्रचार माध्यमों की भाषा हिंदी होने के कारण वे भारतीय परिवार और सामाजिक संरचना की उपेक्षा नहीं कर सकते विज्ञापनों से लेकर धारावाहिकों तक में हिंदी अपनी जड़ों से जुड़ी हुई है आरंभ में मीडिया में छोटे पर्दे और बड़े पर्दे पर स्टार टी वी लाए तो उन्हें एहसास हुआ कि अंग्रेजी माध्यम से बढ़िया प्रोग्राम भी शहरी वर्ग के इलीट क्लास तक ही सीमित हैं। परंतु ज्योहिं स्टार टीवी ने हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करने आरंभ किए तो उसके दर्शकों में बेतहाशा वृद्धि हुई भारत में अब डिस्कवरी, सोनी, कलर, आज तक, एनडीटीवी, जी टीवी आदि अनोकानेक चैनल हिंदी में अपने कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। आज की परिस्थितियों में समाचार विश्लेषण तक में कोड मिश्रित हिंदी का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है। पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, पारिवारिक, जासूसी, वैज्ञानिक और हास्य प्रधान अनेक प्रकार के धारावाहिकों का प्रदर्शन विभिन्न चैनलों पर जिस हिंदी में किया जा रहा है उसमें विषय संदर्भित व्याहारिक भाषा रूपों और कोडों का मिश्रण किया जाता है जिस सहज ही जनस्वीकृति मिल रही है। हिंदी पत्रकारिता में सुविधा ने बाजारी व्यवस्था प्रकार का साहित्य प्रचुर शिक्षा और परस्पर व्यवहार इंटरनेट और वेबसाइट की पूर्णरूप से ऑनलाइन पत्र दरवाजे खोल दिए हैं यही हिंदी पत्रकारिता में डिजिटल तकनीकी और बरंगे चित्रों के प्रकाशन की सुविधा ने बाजारी व्यवस्था को परिवर्तित कर दिया है। आज हिंदी में विविध प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है तथा मनोरंजन, ज्ञान, शिक्षा और परस्पर व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में उसका विस्तार हो रहा है इंटरनेट और वेबसाइट की सुविधा ने पत्र व पत्रिकाओं के ई संस्करणों तथा पूर्णरूप से ऑनलाइन पत्र व पत्रकाओं को उपबल्ध कराकर सर्वथा ई दुनिया के दरवाजे खोल दिए हैं यही कारण है कि आज हिंदी की अनेक पत्रिकाएं इस रूप में कहीं भी और कभी भी सुलभ हैं तथा इंटरनेट पर हिंदी में अब हर प्रकार की जानकारी प्राप्त हो रही है। कंप्यूटर युग में अनुवाद कार्य का विस्तार कंप्युटर युग में विश्व और सिकुड़ गया है। अब घर बैठे विश्व में कहीं भी संपर्क स्थापित किया जा सकता है वैश्वीकरण के इस दौर में अनुवाद के कार्य का विस्तार दिनौदिन बढ़ता जा रहा है। वह दिन दूर नहीं जब तकनीक के आदान-प्रदान में अनुवाद अपनी विशेष भूमिका अदा कर पाएगा

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

इंटरनेट के माध्यम से हिंदी की विभिन्न वेबसाइट, चिट्ठाकार और अनेकानेक सामग्री उपलब्ध हो रही है। यूनिकोड के माध्यम से कंप्युटर पर अब किसी भी भाषा में कार्य करना न केवल सरल ही हो गया है अपितु जिस भाषा में हम अपने सिस्टम पर सामग्री तैयार करते हैं उसे विश्व के किसी भी कोने में न केवल यथावत पा ही सकते हैं अपितु इच्छानुसार परिवर्तित भी कर सकते हैं आज हिंदी के स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकृति में बदलाव आया है। आज हिंदी समूचे भूमंडल की एक प्रमुख भाषा के रूप में उभरी है आज की बदलती परिस्थितियों में हिंदी भाषियों और भारत की शक्ति के नाते ही सही अमेरीकी सरकार के साथ साथ कम्प्यूटरक किंग कहे जाने ववाले बिल गेट्स भी हिंदी के उपयोग में दिलचस्पी दिका रहे हैं गूगल के मुख्य अधिकारियों का मानना है कि भविष्य में स्पेनिश नहीं बल्कि अंग्रेजी और चीनी के साथ हिंदी ही इंटरनेट की प्रमुख भाषा होगी। आजकल गूगल के माध्यम से अंग्रेजी भाषा से हिंदी भाषा में स्पीच से सीधा अनुवाद भी उपलब्ध होने लग गया है गूगल सॉफ्टवेयर से अंग्रेजी डाक्यूमेंट को हिंदी भाषा में तुरंत अनुदित करने की सुविधा उपलब्ध हो गई है।

## फिल्मों में हिंदी

फिल्म के माध्यम से भी हिंदी को वैश्वक स्तर पर सम्मान प्राप्त हो रहा है आज अनेक फिल्मकार भारत ही नहीं यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देशों के अपने दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्में बना रहे हैं और हिंदी सिनेमा ऑस्कर तक पहंच रहा है। सिनेमा ने हिंदी की लोकप्रियता और व्यावहारिकता दोनों ही बढ़ाई है। कहने को तो बड़े पर्दे पर अनेकाने फिल्में डब होती रहती हैं, परंतु जिस दिन से हालीवुड की फिल्मों को बालीवुड की भाषा में लाने की कोशिश शुरू हुई उसी दिन से एक नई चीज फिल्म इंटस्ट्री में देखने को मिल रही है जब जुरासिक पार्क को हिंदी में डब किया गया तो देश के दूरदराज के गोव व कस्बों तक उसे खूब पसंद किया गया उल्लेकनीय यह है कि इसके पहले किसी भी विदेशी फिल्म ने इतना मुनाफी नहीं कमाया था। ये तथ्य इस बात के संकेत है कि हिंदी में कितनी जबरदस्त क्षमता है

## संचार माध्यमों में हिंदी

सूचनाओं का व्यापक संप्रेषण करने वाला संचार माध्यम समाज का दर्पण है। संचार माध्यमों का ताना और बाना अधिक जटिल और व्यापक है क्योंकि वे तुरंत और दूरगामी असर करते हैं। वैश्वीकरण ने उन्हें अनेक चैनल उपलब्ध कराए हैं। इंटरनेट और वेबसाइट के रूप में अंतर्राष्ट्रीयता के नए अस्त्र और शस्त्र मुहैया कराए हैं। संचार माध्यमों की भाषा में नए शब्दों, वाक्यों, अभिव्यक्तियों और वाक्य संयोजन की विधियों का समावेश होता रहता है जिससे हिंदी भाषा के सामर्थ्य में वृद्धि हुई है संचार माध्यम भाषा द्वारा ही आज के आदमी को पूरी दुनिया से जोड़ते हैं। संचार माध्यम की भाषा के रूप में प्रयुक्त होने पर हिंदी समस्त ज्ञान विज्ञान और आधुनिक विषयों से सहज ही जुड़ गई है। वह अदालतनुमा कार्यक्रमों के रूप में सरकार और

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

प्रशासन से प्रश्न पूछती है, विश्व जनमत का निर्माण करने के लिए बुद्धिजीवियों और जनता के विचारों के प्रकटीकरण और प्रसारण का आधार बनती है, सच्चाई का बयान करके समाज को अफवाहों से बचाती है, विकास योजनाओं के संबंध में जन शिक्षण का दायित्व निभाती है, घटनाचक्र और समाचारों का गहन विश्लेषण करती है तथा वस्तु की प्रकृति के अनुकूल विज्ञापन की रचना करके उपभोक्ता को उसकी अपनी भाषा में बाजार से चुनाव की सुविधा मुहैया कराती है। व्यवहार क्षेत्र की व्यापकता के कारण संचार माध्यमों के सहारे हिंदी भाषा की संप्रेषण क्षमता का बहुमुखी विकास हो रहा है। राष्ट्रीय और विविध अंतर्राष्ट्रीय चैनलों में हिंदी आधुनिक संदर्भो के व्यक्त करने के अपने सामर्थ्य को विश्व के समक्ष प्रमाणित कर रही है। आज संचार माध्यम की भाषा बनकर हिंदी ने जनभाषा का रूप धारण करके व्यापक जन स्वीकृति प्राप्त की है संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा का तेजी से सरलीकरण होने से वैश्विक स्तर पर भी उसे स्वीकृति प्राप्त हो रही है अंत में कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा ने बाजार और कंप्यूटर दोनों की भाषा के रूप में अपना सामर्थ्य सिदध कर दिया है। भविष्य की विश्वभाषा की ये ही तो दो कसौटियां बताई जाती रही हैं। आजकल मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक दोनों ही प्रकार के जनसंचार माध्यम नए विकास के आयामों को छू रहे हैं हिंदी भाषी भी बाधाओं को पार करते हुए नित नवीन ऊंचाइयां छू रही है। वैश्वीकरण के इस युग में भारतीय संस्कृति विश्व पर हावी हो रही है। आज के मानसिक तनाव को देखते हुए विश्व की बड़ी कंपनियां अपने कर्मचारियों के लिए योग एवं ध्यान के प्रशिक्षण के उपाय कर रही हैं। हमारे योग गुरू बाबा रामदेव जी और अन्य गुरू आज देश विदेश में जाकर भारतीय संस्कृति का प्रचार व प्रसार कर रहे हैं। विदेशी समुदाय इससे लाभान्वित हो रहा है सूचना, समाचार और संवाद प्रेषण के लिए हिंदी को विकल्प के रूप में अपनाकर समृद्ध किया है। वैश्वीकरण के कारण जहां पूरा विश्व एक गांव में तब्दील हो चुका है वैश्विक बाजार संस्कृति के लिए हिंदी सबसे अनुकूल भाषा के रूप में अपनाई जा रही है। इससे जहां एक ओर हिंदी का विकास व विस्तार हो रहा है वहीं दूसरी ओर संपूर्ण राष्ट्र में भाषिक संपन्नता का परिचय पाकर हिंदी की स्वीकृति का भी क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है हिंदी भाषा विक्रेता और क्रेता के बीच सेतु का कार्य कर रही है आज कंप्यूटर, मोबाइल, फेसबुक, ट्वीटर, ब्लॉक, वाट्सएप इत्यादि पर हिंदी के प्रयोग ने दुनिया को सचमुच मनुष्य की मुट्ठी में कर दिया है वह दिन दूर नहीं जब हर जगह हिंदी भाषा का बोलबाला नजर आएगा। भारत की सदियों पुरानी उक्ति वसुधैव कुटुम्बकम् एक बार फिर से चरितार्थ होती जा रही है।

## निष्कर्ष

वैश्वीकरण में आर्थिक और सास्कृतिक दोनों दृष्टि से हिंदी की भूमिका बढ़ी है नई बाजार संस्कृति अब तक स्वायत्त रहे समाजों और संस्कृतियों के रहन-सहन, आचार-विचार, भाषा-भूषा और मूल्यबोध सभी का अपने तरीके से अनुकूलन कर रही है। टेलीविजन ने इस तरह हिंदी के भाषा वैविध्य और संप्रेषण क्षमता को

@2022 International Council for Education Research and Training 2022, Vol. 01, Issue 01, 39-48
ISSN: 2959-1376

सर्वथा नई दिशाएं प्रदान की हैं। वैश्वीकरण के इस सघन और उत्कट समय में मीडिया को वर्चस्वशाली भाषा और उच्च तकनीकी विकास का स्त्रोत तथा आधुनिकता के मूल्यों का वाहक माना जा रहा है। विज्ञापनों की भाषा और प्रमोशन वीडियो की भाषा के रूप में सामने आने वाली हिंदी शुद्धतावादियों को भले ही न पच रही हो, युवा वर्ग ने उसे देश भर में अपने सक्रिय भाषा कोष में शामिल कर लिया है। यह हिंदी का ही कमाल है कि आज राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों को हम गांवों में प्राप्त कर सकते हैं समाचार पत्रों टी वी की विज्ञापन संस्कृति का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। अभिव्यक्ति कौशल के विकास का अर्थ भाषा का विकास ही है बाजारीकरण ने आर्थिक उदारीकरण, सूचनाक्रांति तथा जीवन शैली के वैश्वीकरण की जो स्थितियां भारत की जनता के सामने रखी, इसमें संदेह नहीं कि उनमें पड़कर हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति कौशल का विकास ही हुआ। आज प्रचार माध्यमों की भाषा हिंदी होने के कारण वे भारतीय परिवार और सामाजिक संरचना की उपेक्षा नहीं कर सकते विज्ञापनों से लेकर धारावाहिकों तक में हिंदी अपनी जड़ों से जुड़ी हुई है।

## संदर्भ

1. www.nutankahaniyan.page

2. www.jansatta.com

3. www.sanchar.com

4. https://rajbhasha.gov.in

5. भरत झुनझुनवाला-'गांधीवादी अर्थशास्त्र से पलायन राजस्थान पत्रिका (जोधपुर)

6. डॉ. रविकांत पाण्डेय- 'वैश्वीकरण एवं समाज'

7. डॉ. संगम लाल पाण्डेय- 'गांधी का दर्शन'

8. डॉ. वर्मा, वी.पी.- ''आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन' 1998, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशक

9. डॉ. पाण्डेय, रविप्रकाश- ''वैश्वीकरण एवं समाज' शेखर प्रकाशन इलाहाबाद

10. Kautsky (1962) "Political change in undeveloped Countries" New York

11. Srinivas, M.N. (1967) "Social Change in Modern India" University of California Press, Berkeley

12. Abegglen, J.C. (1994) "Sea, Change; Pacific Asia as the New World Industrial Center", New York: Free Press

13. Albrow (1996), "The Global Age", Cambridge, Policy Press